Appendix - A

एम.पी.ए.(गायन / स्वर वाद्य) हेतु प्रश्नपत्र योजना

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्न–पत्र लिखित होंगे तथा दो प्रश्न पत्र प्रायोगिक होंगे। साथ ही प्रत्येक प्रश्न पत्र के साथ आन्तरिक मूल्यांकन हेतु भी अंक निर्धारित किय गये हैं। प्रश्न पत्रों का विवरण निम्नानुसार है –

सेमेस्टर– 1

प्रश्न पत्र	प्रश्न पत्र का नाम	बाह्य मूल्यांकन		आंतरिक मूल्यांकन		पूर्णांक	उत्तीर्णांक
		पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक		
प्रथम	प्राचीन भारतीय संगीत का इतिहास एवं शास्त्र	70	28	30	12	100	40
द्वितीय	शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	70	28	30	12	100	40
तृतीय	प्रायोगिक – मौखिक	70	28	30	12	100	40
चतुर्थ	प्रायोगिक – मंच प्रदर्शन	70	28	30	12	100	40
						400	

सेमेस्टर– 2

प्रश्न पत्र	प्रश्न पत्र का नाम	बाह्य मूल्यांकन		आंतरिक मूल्यांकन		पूर्णांक	उत्तीर्णांक
		पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक		
प्रथम	मध्यकालीन भारतीय संगीत का इतिहास एवं शास्त्र	70	28	30	12	100	40
द्वितीय	शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	70	28	30	12	100	40
तृतीय	प्रायोगिक – मौखिक	70	28	30	12	100	40
चतुर्थ	प्रायोगिक – मंच प्रदर्शन	70	28	30	12	100	40
						400	

सेमेस्टर– 3

प्रश्न पत्र	प्रश्न पत्र का नाम	बाह्य मूल्यांकन		आंतरिक मूल्यांकन		पूर्णांक	उत्तीर्णांक
		पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक		
प्रथम	सौन्दर्य शास्त्र, कण्ठ संस्कार एवं शोध प्रविधि	70	28	30	12	100	40
द्वितीय	शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	70	28	30	12	100	40
तृतीय	प्रायोगिक – मौखिक	70	28	30	12	100	40
चतुर्थ	प्रायोगिक – मंच प्रदर्शन	70	28	30	12	100	40
						400	

सेमेस्टर– 4

प्रश्न पत्र	प्रश्न पत्र का नाम	बाह्य मूल्यांकन		आंतरिक मूल्यांकन		पूर्णांक	उत्तीर्णांक
		पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक		
प्रथम	आधुनिक भारतीय संगीत का इतिहास एवं शास्त्र	70	28	30	12	100	40
द्वितीय	शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	70	28	30	12	100	40
तृतीय	प्रायोगिक – मौखिक	70	28	30	12	100	40
चतुर्थ	प्रायोगिक – मंच प्रदर्शन	70	28	30	12	100	40
						400	

गायन एवं स्वरवाद्य

	इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,खैरागढ़(छ.ग.) **गायन/तन्त्रीवाद्य विभाग, संगीत संकाय** **स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम - गायन/स्वर वाद्य** **एम.पी.ए.**	शैक्षणिक सत्र 2021-22 से लागू

समय : 3 घण्टे	**सेमेस्टर -1** **प्रश्न पत्र- 1** **प्राचीन भारतीय संगीत का इतिहास एवं शास्त्र** **(वैदिक काल से 11वीं शताब्दी तक)**	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई : 1

संगीत की उत्पत्ति से संबंधित भारतीय एवं पाश्चात्य मतों का परिचय। वैदिक ग्रन्थ, शिक्षा ग्रन्थ व पौराणिक ग्रन्थों में उल्लिखित संगीत विषयक तत्त्वों की जानकारी। रामायण, महाभारत, मौर्य व गुप्त काल के भारतीय संगीत का परिचय।

इकाई : 2

दत्तिलम्, नाट्यशास्त्र, बृहद्देशी एवं भरतभाष्यम् ग्रन्थों का सामान्य परिचय व संगीत से संबंधित अध्यायों की विषय सामग्री की जानकारी।

इकाई : 3

गांधर्व–गान, मार्ग–देशी, ग्राम, मूर्च्छना, जाति और ग्राम राग आदि दश–विध राग वर्गीकरण का विस्तृत अध्ययन।

इकाई : 4

मार्गताल एवं देशीताल पद्धति का अध्ययन। ताल के दस प्राणों का विस्तृत अध्ययन।

इकाई– 5

वाद्यों का वर्गीकरण एवं प्राचीन वाद्यों का सामान्य परिचय – चित्रा, विपन्ची, मत्तकोकिला, त्रिपुष्कर, मृदंग, पणव, दर्दुर, जयघण्टा एवं कांस्यताल।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- भारतीय संगीत का इतिहास : डॉ. उमेश जोशी
- भारतीय संगीत का इतिहास : श्री शरतचन्द्र परांजपे
- संगीत जिज्ञासा एवं समाधान : डॉ. तेजसिंह टांक
- भारतीय संगीतशास्त्र : आचार्य तुलसीराम देवांगन
- भारतीय संगीत वाद्य : डॉ. लालमणि मिश्र

गायन एवं स्वरवाद्य

समय : 3 घण्टे	सेमेस्टर -1 प्रश्न पत्र- 2 शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई : 1

निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण आलाप तान सहित –

A. अहीर भैरव
B. बैरागी भैरव
C. नट भैरव
D. पूरियाकल्याण
E. श्यामकल्याण
F. शुद्धकल्याण
G. जोग
H. कलावती
I. यमन

इकाई : 2

रागांग वर्गीकरण का अध्ययन एवं भैरव तथा कल्याण रागांगों का अध्ययन।

इकाई : 3

स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरु, नष्ट और उदिष्ट का अध्ययन।

इकाई : 4

तान की रचना करना एवं तिहाई सिद्धान्त।

इकाई– 5

कर्नाटक गीत प्रकार एवं ताल पद्धति का सामान्य अध्ययन।

गायन एवं स्वरवाद्य

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- अभिनव गीतांजलि : पं. रामाश्रय झा 'रामरंग'
- भारतीय संगीतशास्त्र : आचार्य तुलसीराम देवांगन
- संगीतांजलि भाग – 5 : पं. ओंकारनाथ ठाकुर

समय : 30 मिनट	सेमेस्टर - 1 प्रश्न पत्र- 3 प्रायोगिक -मौखिक	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

1. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 4 रागों में विलम्बित रचना तथा सभी रागों में मध्य/द्रुत रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन –

A. अहीर भैरव
B. बैरागी भैरव
C. नट भैरव
D. पूरियाकल्याण
E. श्यामकल्याण
F. शुद्धकल्याण
G. जोग
H. कलावती
I. यमन

2. उपर्युक्त रागों में से पृथक्–पृथक् रागों में एक ध्रुपद अथवा धमार (उपज सहित) तथा एक तराने का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक् अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप–तान सहित वादन।

गायन एवं स्ववाद्य

<table>
<tr>
<td>समय : 20 मिनट</td>
<td>सेमेस्टर -1
प्रश्न पत्र- 4
प्रायोगिक -मंच प्रदर्शन</td>
<td>पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70,
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28
आंतरिक मूल्यांकन : 30,
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12</td>
</tr>
<tr>
<td colspan="3">1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर विलंबित एवं मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।

2. परीक्षक द्वारा दिये गये पाँच रागों में से किसी एक राग की बन्दिश गायकी/तंत्रकारी के साथ प्रस्तुति।</td>
</tr>
</table>

गायन एवं स्वरवाद्य

गायन एवं स्वरवाद्य

	इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,खैरागढ़(छ.ग.) **गायन/तन्त्रीवाद्य विभाग, संगीत संकाय** **स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम - गायन/स्वर वाद्य** **एम.पी.ए.**	शैक्षणिक सत्र 2021-22 से लागू

समय : 3 घण्टे	**सेमेस्टर -2** **प्रश्न पत्र- 1** ***मध्यकालीन भारतीय संगीत का इतिहास*** *(12 वीं से 17वीं शताब्दी तक)*	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई– **I**

श्रुति और स्वर का संबंध तथा श्रुति और स्वर पर विभिन्न ग्रंथकारों के विचार। श्रुतियों के विभिन्न नाप (प्रमाण श्रुति, उपमहती श्रुति और महती श्रुति)। शारंगदेव, रामामात्य, व्यंकटमखी और अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन।

इकाई– **II**

संगीत रत्नाकर, संगीतसमयसार, संगीतराज स्वरमेल कलानिधि, राग तरंगिणी', 'संगीत पारिजात', 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका', 'संगीत दर्पण' एवं 'रागविबोध' ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय।

इकाई– **III**

प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार। प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय। ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं विकास तथा ध्रुपद की बानियों का अध्ययन।

इकाई– **IV**

अष्टछाप के संत कवियों के संगीत संबंधित विषयों का परिचय। मध्यकालीन ग्रन्थों के आधार पर एकतंत्री, आलापनी, किन्नरी, त्रितन्त्री, पिनाकी, वंश एवं मधुकरी वाद्यों का अध्ययन।

इकाई– **V**

भारत की विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों का सामान्य परिचय – कथक, भरतनाट्यम्, कथकली, ओडिसी, मोहिनीअट्टम्, सत्रिय।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- भारतीय संगीत का दर्शनपरक अनुशीलन : डॉ. विमला मुसलगांवकर
- संगीतमणि भाग 1 एवं 2 : डॉ. महारानी शर्मा
- भारतीय संगीत में निबद्ध : डॉ. सुभद्रा चौधरी
- संगीतांजलि भाग–4 : पं. ओंकारनाथ ठाकुर
- भारतीय संगीतशास्त्र ग्रन्थपरम्परा–एक अध्ययन : डॉ. लिपिका दासगुप्ता

समय : 3 घण्टे	सेमेस्टर -2 प्रश्न पत्र- 2 शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई– **I**

निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण आलाप तान सहित –

A. शुद्ध सारंग
B. मधमाद सारंग
C. रागेश्री
D. देसी
E. गोरखकल्याण
F. झिंझोटी
G. विभास (भैरव थाट)
H. मधुवंती

इकाई– **II**

थाट–राग वर्गीकरण का अध्ययन। सारंग एवं खमाज रागांगों का अध्ययन।

इकाई– **III**

संगीत एवं काव्य और ताल एवं छन्द का संबंध।

इकाई– **IV**

विभिन्न प्रकार की बन्दिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई– **V**

पाश्चात्य संगीत के प्रमुख तत्त्व। स्टाफ नोटेशन पद्धति का अध्ययन तथा भारतीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव।

गायन एवं स्वरवाद्य

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- अभिनव गीतांजलि : पं. रामाश्रय झा 'रामरंग'
- भारतीय संगीतशास्त्र : आचार्य तुलसीराम देवांगन
- संगीतांजलि भाग – 5 : पं. ओंकारनाथ ठाकुर
- पाश्चात्य संगीत शिक्षा – डॉ. भगवतशरण शर्मा
- पाश्चात्य स्वरलिपि – डॉ. स्वतंत्र शर्मा

<table>
<tr><td>समय : 30 मिनट</td><td>सेमेस्टर -2
प्रश्न पत्र- 3
प्रायोगिक -मौखिक</td><td>पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70,
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28
आंतरिक मूल्यांकन : 30,
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12</td></tr>
</table>

1. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 4 रागों में विलम्बित रचना तथा सभी रागों में मध्य/द्रुत रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन –

A. शुद्ध सारंग
B. मधमाद सारंग
C. रागेश्री
D. देसी
E. गोरखकल्याण
F. झिंझोटी
G. विभास (भैरव थाट)
H. मधुवंती

2. राग खमाज, पहाड़ी अथवा काफी में से किसी एक राग में ठुमरी/दादरा/टप्पा/धुन।

गायन एवं स्वरवाद्य

समय : 20 मिनट	सेमेस्टर -2 प्रश्न पत्र- 4 प्रायोगिक -मंच प्रदर्शन	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12
1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर विलंबित एवं मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित प्रदर्शन। 2. परीक्षक द्वारा दिये गये पाँच रागों में से किसी एक राग की बन्दिश गायकी/तंत्रकारी के साथ प्रस्तुति।		

गायन एवं स्ववाद्य

गायन एवं स्वरवाद्य

	इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,खैरागढ़(छ.ग.) **गायन/तन्त्रीवाद्य विभाग, संगीत संकाय** **स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम – गायन/स्वर वाद्य** **एम.पी.ए.**	शैक्षणिक सत्र 2020-21 से लागू

समय : 3 घण्टे	**सेमेस्टर -3** **प्रश्न पत्र- 1** **सौन्दर्यशास्त्र, कण्ठ संस्कार एवं शोध-प्रविधि**	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई– **I**

सौन्दर्य शास्त्र का परिचय, विश्लेषण एवं क्षेत्र। सौन्दर्यानुभूति : प्रक्रिया एवं उपादान।

इकाई– **II**

कला की परिभाषा एवं वर्गीकरण।

इकाई– **III**

रस की परिभाषा व भेदों का सामान्य अध्ययन। रस और संगीत का संबंध।

इकाई– **IV**

अनुसंधान की परिभाषा एवं प्रक्रिया, शोध–प्रविधि का सामान्य परिचय। शोध–विषय चयन, विषय की रूपरेखा (Synopsis) एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची। भारतीय संगीत में शोध की दिशाएँ।

इकाई– **V**

भारतीय संगीत के लिये कण्ठ–संस्कार विधि। स्वरोत्पादक यंत्र एवं कर्णेन्द्रिय की बनावट का अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- सौन्दर्य, रस एवं संगीत : प्रो. स्वतंत्र शर्मा
- संगीत की अनुसंधान प्रक्रिया : डॉ. मनोरमा शर्मा
- Voice Culture : Dr. S.A.K. Durga

गायन एवं स्वरवाद्य

समय : 3 घण्टे	सेमेस्टर -3 प्रश्न पत्र- 2 शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई– **I**

निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण आलाप तान सहित –

A. बिलासखानी तोड़ी
B. भूपाल तोड़ी
C. मियां मल्हार
D. गौड़ मल्हार
E. सूर मल्हार
F. मारूबिहाग
G. बागेश्री
H. सरस्वती
I. मधुकौन्स

इकाई– **II**

शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण राग वर्गीकरण का उदाहरण सहित विस्तृत अध्ययन। तोड़ी और मल्हार रागांगों का अध्ययन।

इकाई– **III**

दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को उपयुक्त राग व ताल में निबद्ध कर स्वरलिपि में लिखना।

इकाई– **IV**

अंकों के माध्यम से विभिन्न लयकारियों को काललिपि में लिखने का ज्ञान/प्रचलित तालों को डेढ़ गुन (3/2) पौन गुन (3/4) एवं सवागुन (5/4) लयकारियों में लिखने का अभ्यास।

इकाई– **V**

भारतीय संगीत में वृन्दगान एवं वृन्दवादन का अध्ययन।

गायन एवं स्वरवाद्य

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- अभिनव गीतांजलि : पं. रामाश्रय झा 'रामरंग'
- भारतीय संगीतशास्त्र : आचार्य तुलसीराम देवांगन
- संगीतांजलि भाग – 3 : पं. ओंकारनाथ ठाकुर

समय : 30 मिनट	सेमेस्टर -3 प्रश्न पत्र- 3 प्रायोगिक -मौखिक	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

1. निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 4 रागों में विलम्बित रचना तथा सभी रागों में मध्य/द्रुत रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन –

A. बिलासखानी तोड़ी
B. भूपाल तोड़ी
C. मियां मल्हार
D. गौड़ मल्हार
E. सूर मल्हार
F. मारूबिहाग
G. बागेश्री
H. सरस्वती
I. मधुकौन्स

2. उपर्युक्त रागों में से पृथक्–पृथक् रागों में एक ध्रुपद अथवा धमार (उपज सहित) तथा एक तराने का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप–तान सहित वादन।

गायन एवं स्वरवाद्य

समय : 20 मिनट	**सेमेस्टर -3** **प्रश्न पत्र- 4** **प्रायोगिक -मंच प्रदर्शन**	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर विलंबित एवं मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।

2. परीक्षक द्वारा दिये गये पाँच रागों में से किसी एक राग की बन्दिश गायकी/तंत्रकारी के साथ प्रस्तुति।

गायन एवं स्वरवाद्य

गायन एवं स्वरवाद्य

	इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,खैरागढ़(छ.ग.) **गायन/तन्त्रीवाद्य विभाग, संगीत संकाय** **स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम - गायन/स्वर वाद्य** **एम.पी.ए.**	शैक्षणिक सत्र 2020-21 से लागू

समय - 3 घण्टे	सेमेस्टर -4 प्रश्न पत्र- 1 आधुनिक भारतीय संगीत का इतिहास एवं शास्त्र (18वीं शताब्दी से वर्तमान काल तक)	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई– **I**

घराने का अर्थ एवं महत्त्व। ख्याल गायन के दिल्ली, ग्वालियर, आगरा, जयपुर, किराना तथा पटियाला घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन। ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का विवेचन। ध्रुपद की वर्तमान में प्रचलित परम्पराओं (दरभंगा, डागर, विष्णुपुर और हवेली) का अध्ययन।

इकाई– **II**

सेनिया घराने का सामान्य परिचय। इमदादखानी सितार, सुरबहार का घराना एवं उस्ताद हाफिज़ अली खाँ के सरोद घराने का अध्ययन। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का सितार एवं सरोद घराना। बेला (वायलिन), बाँसुरी, सारंगी तथा शहनाई के प्रमुख वादकों का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

इकाई– **III**

कृष्णानन्द व्यास, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, राजा नवाबअली, पं. एस.एन. रातंजनकर, संत त्यागराज, सवाई प्रताप सिंह देव, विलियम जोन्स, कैप्टन विलर्ड, एस. एम. टैगोर, इ. क्लीमेंन्ट्स, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, आचार्य बृहस्पति, डॉ. प्रेमलता शर्मा एवं पं. रामाश्रय झा द्वारा किये गये सांगीतिक कार्यों का संक्षिप्त परिचय।

इकाई– **IV**

सितार, सरोद, सारंगी, बेला(वायलिन), बाँसुरी, शहनाई एवं सन्तूर की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन। रुद्रवीणा, सुरबहार, तबला, पखावज का संक्षिप्त परिचय।

इकाई– **V**

मंचीय प्रस्तुति हेतु आवश्यक ध्वनि उपकरण – माइक, एम्प्लीफायर, मिक्सर, स्पीकर, रिवब (Reverb) का सामान्य परिचय।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- संगीत के घरानों की चर्चा : डॉ. सुशील कुमार चौबे
- घरानेदार गायकी : श्री वामनहरि देशपाण्डे
- भारतीय संगीत के तंत्रीवाद्य : डॉ. प्रकाश महाडि

गायन एवं स्वरवाद्य

समय - 3 घण्टे	सेमेस्टर -4 प्रश्न पत्र- 2 शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक सिद्धान्त	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

इकाई– **I**

निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण आलाप तान सहित –

A. बिहाग
B. भटियार
C. दरबारी कान्हड़ा
D. आभोगी कान्हड़ा
E. देवगिरि बिलावल
F. जोगकौंस
G. भीमपलासी
H. कौंसी कान्हड़ा

इकाई– **II**

बिलावल एवं कान्हड़ा रागांगो का अध्ययन।

इकाई– **III**

रवीन्द्र संगीत का विस्तृत अध्ययन।

इकाई– **IV**

वर्तमान में प्रचलित किसी एक थाट से मूर्च्छना के आधार पर अन्य थाटों की उत्पत्ति।

इकाई– **V**

न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।

गायन एवं स्वरवाद्य

सन्दर्भ ग्रन्थ :

- अभिनव गीतांजलि : पं. रामाश्रय झा 'रामरंग'
- भारतीय संगीतशास्त्र : आचार्य तुलसीराम देवांगन
- संगीतांजलि भाग – 3 : पं. ओंकारनाथ ठाकुर
- संगीतविशारद : बसन्त

समय - 3 घण्टे	**सेमेस्टर -4** **प्रश्न पत्र- 3** **प्रायोगिक -मौखिक**	पूर्णांक : 100 बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28 आंतरिक मूल्यांकन : 30, न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12

1 निम्नलिखित रागों में से किन्हीं 4 रागों में विलम्बित रचना तथा सभी रागों में मध्य/द्रुत रचना का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन –

A. बिहाग	D. आभोगी कान्हड़ा	G. भीमपलासी
B. भटियार	E. देवगिरि बिलावल	H. कौंसी कान्हड़ा
C. दरबारी कान्हड़ा	F. जोगकौंस	

2 राग भैरवी, पीलू, देश अथवा शिवरजंनी में से किसी एक राग में ठुमरी/दादरा/टप्पा/धुन।

गायन एवं स्वरवाद्य

<table>
<tr>
<td>समय - 20 मिनट</td>
<td>सेमेस्टर -4
प्रश्न पत्र- 4
प्रायोगिक -मंच प्रदर्शन</td>
<td>पूर्णांक : 100
बाह्य मूल्यांकन पूर्णांक : 70,
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 28
आंतरिक मूल्यांकन : 30,
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 12</td>
</tr>
<tr>
<td colspan="3">1. निर्धारित पाठ्यक्रम में से परीक्षार्थी द्वारा कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर विलंबित एवं मध्यलय की रचना का विस्तृत गायकी/तंत्रकारी सहित प्रदर्शन।

2. परीक्षक द्वारा दिये गये पाँच रागों में से किसी एक राग की बन्दिश गायकी/तंत्रकारी के साथ प्रस्तुति।</td>
</tr>
</table>

गायन एवं स्वरवाद्य

गायन एवं स्वरवाद्य